'तेरा वर्ष'

संबंधानुभूति सप्ताह – भगवान मेरे प्यारे पिता

15.09.2013

1. स्वमान – मैं भगवान की गोद में पलने वाला ईश्वरीय औलाद हूँ।

- (स्वयं को इस प्रकार कॉमेन्ट्री दें) जिससे मिलने के लिये लाखों आत्मायें दर-दर भटक रही हैं....जिसकी एक झलक पाने के लिए व्रत, पूजा, पाठ कर रही हैं....वह परमात्मा मेरे पिता हैं....उन्होंने मुझे ढूंढकर अपनी गोद का बच्चा बना लिया....वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य वाह....स्वयं भगवान मेरी अंगुली पकड़कर चला रहे हैं....मुझे ज्ञान, गुण व शक्तियों से श्रृंगार रहे हैं....।

2. योगाभ्यास –

अ. मैं परमधाम में अपने पिता के सम्मुख बैठा हूँ....वे मुझे सर्व गुणों और शक्तियों से भरपूर करके ईश्वरीय पैगाम देने के लिए धरा पर भेज रहे हैं....।

ब. बाबा कहते हैं कि बच्चे मैं अब बुजुर्ग हुआ, अब तुम मेरी सीट संभालो....मैं बाप समान बनकर बाबा की सीट पर बैठ सारे संसार को वैसे ही वायब्रेशन दे रहा हूँ जैसे बाबा देते हैं....।

स. हर संकल्प, बोल व कर्म से पूर्व यह चेक करें कि क्या यह मेरे पिता के समान है... ? यदि हाँ तो करें, अन्यथा उसका त्याग कर दें....।

3. धारणा – आज्ञाकारी बन फॉलो फादर करना

- जो बाप की स्मृति वह बच्चों की स्मृति, जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का कर्तव्य। इसको कहा जाता है - `फॉलो फादर`।
- संगमयुग का श्रेष्ठ स्थान बाप का दिलतख्त है। आज्ञाकारी बच्चे ही इस तख्त पर बैठते हैं।

4. चिंतन –

- ईश्वरीय औलाद को कैसा होना चाहिए और कैसा नहीं ?
- ईश्वरीय औलाद के अधिकार एवं कर्तव्य क्या हैं ?
- ईश्वरीय औलाद की भावनाएं, संकल्प, बोल व कर्म कैसे होंगे ?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! सारे कल्प में किसी भी जन्म में हमें भगवान से पिता के रुप में डायरेक्ट पालना प्राप्त नहीं होता। हर जन्म में देहधारी ही हमें पिता के रुप में मिलते हैं लेकिन अब इस संगमयुगी मरजीवा जन्म में हमें डायरेक्ट भगवान से पिता के रुप में प्यार एवं पालना प्राप्त हो रहा है। क्या आप अपने इस श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में रहते हैं ?